2 द्वितीय अध्याय : साहित्य समीक्षा

2.1 प्रस्तावना

शोध प्रक्रिया में साहित्य समीक्षा (Literature Review) एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है, जिसके माध्यम से शोधकर्ता अपने अध्ययन विषय से संबंधित पूर्व में किए गए कार्यों, विचारों, सिद्धांतों और उपलब्ध स्रोतों का गहन अध्ययन करता है। इसका का मुख्य उद्देश्य यह जानना होता है कि जिस विषय पर वर्तमान शोध किया जा रहा है, उस क्षेत्र में अब तक क्या-क्या कार्य हो चुके हैं, किन-किन बिंदुओं पर विचार किया गया है, और वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता तथा प्रासंगिकता क्या है। यह एक ऐसा विश्लेषणात्मक अभ्यास है जो शोध की दिशा तय करता है और शोधकर्ता को यह स्पष्ट करता है कि उसके अध्ययन का स्वरूप पूर्ववर्ती अध्ययनों से किस प्रकार भिन्न है या किस सीमा तक उसका विस्तार करता है। यह अध्याय शोध कार्य को एक वैचारिक और सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है, साथ ही यह भी सुनिश्चित करता है कि शोधकर्ता अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचे और अपने अध्ययन को नवाचार की दिशा में ले जा सके।

साहित्य समीक्षा (Literature Review): अनुसंधानकर्ता द्वारा जानबूझ कर किया गया एक प्रयत्न जो उसने अपने अनुसंधान अध्ययन के प्रकरण पर अब तक क्या किया जा चुका है और क्या नहीं किया गया है यह जानकारी प्राप्त करने के लिए अध्ययन ने सम्बन्धित सभी प्रकार की उपलब्ध सूचनाओं का मूल्याकन एवं समीक्षा करने के लिए किया जाता है। **(मंगल & मंगल, 2014)**

"प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका" विषय से सम्बंधित किए गए पूर्व शोध कार्यों और विद्वानों की मान्यताओं के आधार पर यह देखा गया है कि बाल साहित्य का समावेश यदि सुनियोजित ढंग से भाषा शिक्षण में किया जाए, तो वह न केवल बालकों की भाषा दक्षता को बढ़ा सकता है बल्कि उनमें सामाजिक मूल्यों, नैतिक चेतना और सौंदर्य बोध का भी विकास कर सकता है। बाल साहित्य में प्रयुक्त सरल भाषा, चित्रों का प्रयोग, लयात्मकता तथा कथात्मकता बच्चों के लिए अधिक बोधगम्य और आकर्षक होती है, जिससे उनका ध्यान भाषा की ओर स्वतः आकर्षित होता है।

अतः यह साहित्य समीक्षा अध्याय शोध के लिए वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार करता है और यह दर्शाता है कि किस प्रकार बाल साहित्य, हिंदी शिक्षण को अधिक जीवंत, प्रभावशाली और बाल-केंद्रित बना

सकता है। इस समीक्षा के आधार पर शोधकर्ता यह स्पष्ट कर सकेगा कि उसके द्वारा चयनित शोध विषय का शैक्षिक जगत में क्या महत्व है और वह पूर्ववर्ती शोधों से किस प्रकार आगे बढ़ रहा है।

2.2 सम्बंधित साहित्य समीक्षा

1. **(दुबे, 2020)** द्वारा किया गया शोध-पत्र **"बाल साहित्य का वर्तमान औचित्य"** में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत जैसे युवा देश में बच्चों का सर्वांगीण विकास अत्यंत आवश्यक है। बालक अपने जीवन के प्रारंभिक आठ वर्ष अर्थात् प्राथमिक स्तर के शिक्षा में अत्यधिक जिज्ञासु, ग्रहणशील और संवेदनशील होते हैं। इस अवस्था में यदि उन्हें उचित बाल साहित्य उपलब्ध कराया जाए, तो न केवल उनका बौद्धिक विकास होता है बल्कि वे नैतिकता, संस्कृति, और सामाजिक मूल्यों से भी परिपूर्ण हो सकते हैं। हिंदी शिक्षण की शुरुआत बाल साहित्य से ही होनी चाहिए क्योंकि वही बच्चे को भाषा से जोड़ता है। "पंचतंत्र", "सिंहासन बत्तीसी", "रंगा और छोटू" जैसी कथाएं बच्चों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करती हैं और भावनात्मक स्तर पर भी उन्हें जोड़ती हैं। शोध में यह संकेत भी मिलता है कि पाठ्यक्रम से बाहर ऐसे साहित्य को शामिल करना चाहिए जो प्रेरणादायक और मूल्यपरक हो।
2. **(कुमार, 2021)** ने अपने शोध लेख **"हिंदी बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान के सार और महत्त्व का अनावरण: एक व्यापक विश्लेषण"** में बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान की भूमिका का व्यापक विश्लेषण किया है। लेखक डॉ. अनिल कुमार ने यह स्पष्ट किया है कि बाल मनोविज्ञान केवल मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को समझने का माध्यम भी है। साहित्यिक दृष्टिकोण से देखें तो बाल साहित्य का निर्माण तभी सार्थक होता है जब उसमें बालकों की मानसिकता, अनुभवों, कल्पनाओं और संवेदनाओं की स्पष्ट झलक हो। लेख में यह स्थापित किया गया है कि बच्चों की भाषा, व्यवहार, रुचियों और अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुए लिखे गए साहित्य से न केवल उनकी भाषा विकास होती है, बल्कि यह उनकी भावनात्मक संतुलन, आत्मबोध और समाजबोध को भी दिशा देता है। लेखक ने यह भी रेखांकित किया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में 'बाल केंद्रित शिक्षा' का आधार बाल मनोविज्ञान ही है, जो बच्चों की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निरंतर नवाचार की ओर प्रेरित करता है। अतः बाल साहित्य केवल मनोरंजन या नैतिकता

का माध्यम न होकर, एक समग्र मनोवैज्ञानिक औजार के रूप में उभरता है, जो बालकों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. **(शर्मा, 2024)** ने अपने शोध लेख **"हिंदी बाल साहित्य लेखन की परंपरा: एक अवलोकन"** में हिंदी बाल साहित्य की ऐतिहासिक यात्रा को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। लेख में प्राचीन ग्रंथों जैसे पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक आदि से लेकर भक्तिकालीन बाल वर्णन और आधुनिक युग में भारतेंदु हरिश्चंद्र जैसे लेखकों के योगदान को रेखांकित किया गया है। लेखिका ने बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं– बाल कविता, कहानी, नाटक, विज्ञान कथाएँ, लोककथाएँ आदि का उल्लेख कर यह स्पष्ट किया है कि ये रचनाएँ बच्चों के बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक हैं। यह आलेख बाल साहित्य के महत्व और उसकी विकास यात्रा का एक सारगर्भित व शोधपरक प्रस्तुतिकरण है।
4. **(तिवारी, 2024)** द्वारा रचित आलेख **"बाल साहित्य का संदर्भ और हिंदी साहित्य"** में बाल साहित्य की स्पष्ट परिभाषा, स्वरूप और उसके महत्व को रेखांकित किया गया है। लेखिका ने बताया कि बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य वही कहलाता है जो उनकी मानसिकता, भाषा, और अनुभवों के अनुकूल हो। लेख में यह भी स्पष्ट किया गया है कि बाल साहित्य को प्रभावी बनाने के लिए बाल मनोविज्ञान की समझ आवश्यक है। यह साहित्य बच्चों की जिज्ञासा, रचनात्मकता और सामाजिक समझ को विकसित करने में सहायक होना चाहिए। संक्षेप में, यह आलेख बाल साहित्य के स्वरूप और उसकी भूमिका को शोधपरक दृष्टि से प्रस्तुत करता है।
5. **(द्विजा, 2024)** द्वारा रचित आलेख **"इक्कीसवीं सदी का हिंदी बाल साहित्य"** हिंदी बाल साहित्य के विकास, वर्तमान स्थिति और भविष्य की दिशा पर केंद्रित है। इसमें बाल साहित्य की भूमिका, बच्चों की बदलती मानसिकता, और मीडिया के प्रभाव पर चर्चा की गई है। लेख में यह बताया गया है कि डिजिटल युग में बच्चों की रुचियाँ बदल रही हैं, जिससे बाल साहित्य को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। लेखक ने बाल साहित्य को और अधिक प्रासंगिक और आकर्षक बनाने के लिए तकनीकी उपकरणों के उपयोग और सांस्कृतिक विविधता की प्रस्तुति की सिफारिश की है। यह आलेख बाल साहित्य के क्षेत्र में गहरे शोध और विकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

6. **(सेठी, 2023)** द्वारा रचित शोध आलेख **"बाल-साहित्य की गत्यात्मक आलोचना के मूल्य निर्धारक"** डॉ. सुरेन्द्र विक्रम के योगदान पर केंद्रित है, जिसमें गत्यात्मक आलोचना की परिभाषा और उसकी महत्वता को समझाया गया है। डॉ. सेठी ने बाल-साहित्य की समीक्षा को समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत किया और यह बताया कि बाल-साहित्य को समय, समाज और संस्कृति के बदलावों के साथ समझना जरूरी है। आलेख में यह भी रेखांकित किया गया है कि बाल-साहित्य समीक्षा को एक वैचारिक आंदोलन के रूप में देखा जाना चाहिए, ताकि उसकी प्रासंगिकता बनी रहे।
7. **(मोक्षेंद्र, 2023)** ने अपने शोध लेख **"बाल साहित्य के लिए आवश्यक निर्धारितियाँ"** में बाल साहित्य के प्रभावी सृजन हेतु आवश्यक मानदंडों पर प्रकाश डाला है। इसमें मुख्य रूप से चार बिंदुओं पर जोर दिया गया है। पहले, बाल साहित्य का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ प्रेरणा और शिक्षा प्रदान करना है, ताकि वे इसे आत्मसात कर सकें। दूसरे, बाल साहित्य में विषय-वस्तु का चयन सोच-समझकर करना चाहिए, क्योंकि बच्चों और वयस्कों की अभिरुचियाँ और समस्याएँ अलग होती हैं। तीसरे, बच्चों की जिज्ञासा को उत्तेजित करने के लिए साहित्य में कौतूहल का समावेश आवश्यक है, जिससे वे ज्ञानार्जन की ओर प्रेरित हों। चौथे, बाल साहित्य में परामानवीय पात्रों का चित्रण बच्चों की मानसिकता और समझ के अनुसार किया जाना चाहिए, ताकि वे प्रेरित हो सकें। इस प्रकार, यह आलेख बाल साहित्य के सृजन में आवश्यक मानदंडों को स्पष्ट करता है, जो बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास में सहायक हैं, और यह शोधकर्ताओं तथा बाल साहित्यकारों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकता है।
8. **(सिंह श. , 2020)** ने अपने शोध लेख **"बाल साहित्य एवं बाल साहित्यकार की जिम्मेदारी"** में बाल साहित्य के सृजन में लेखक की जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला है। लेखक के अनुसार, बाल साहित्य में बच्चों के मनोविज्ञान को समझना बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चे अपने आस-पास के परिवेश और ज्ञान को तेज़ी से ग्रहण करते हैं। इसलिए, लेखक को बच्चों की मानसिकता और समझ के स्तर को ध्यान में रखते हुए रचनाएँ प्रस्तुत करनी चाहिए। लेख में यह भी कहा गया है कि रचनाएँ न तो अत्यधिक बौद्धिक होनी चाहिए, जिससे वे नीरस हो जाएं, और न ही वे सिर्फ मनोरंजन पर केंद्रित होनी चाहिए। बाल साहित्य में बच्चों के मानसिक और नैतिक विकास के लिए

विचारशीलता और प्रेरणा होनी चाहिए। इसके साथ ही, कल्पनाएँ जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराती हुई होनी चाहिए, ताकि बच्चे वास्तविकताओं से रूबरू हो सकें। कुल मिलाकर, बाल साहित्यकारों को बच्चों की मानसिकता और समाज की आवश्यकताओं को समझकर रचनाएँ प्रस्तुत करनी चाहिए, ताकि उनका साहित्य न केवल मनोरंजनपूर्ण हो, बल्कि बच्चों के विकास में भी सहायक हो।

9. **('शशि', 2023)** के द्वारा समीक्षित लेख **"हिन्दी बाल कथा साहित्य सृजन और समीक्षा"** डॉ. देवी प्रसाद गौड़ की पुस्तक पर आधारित है। इस लेख में बाल साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार किया गया है, जो शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। लेखक ने बाल साहित्य को राष्ट्रीय उन्नयन में अहम भूमिका निभाने वाला बताया है, क्योंकि बच्चों का विकास ही राष्ट्र का विकास है। इसके अलावा, पुस्तक में बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता, अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता फैलाने, ग्राम्य परिवेश को समझने, और भारतीय त्योहारों के महत्व पर चर्चा की गई है। इस प्रकार, यह पुस्तक बाल साहित्य के सृजन और समीक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है और शोधकर्ताओं एवं साहित्यकारों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकती है।

10. **(मालाकार, 2024)** द्वारा लिखित शोध आलेख **"बाल साहित्य के विकास में पत्रिकाओं का सफ़र"** में बाल साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास और पत्रिकाओं की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। लेख में बताया गया है कि प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक काल तक, बाल साहित्य ने बच्चों के नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 19वीं सदी से बाल साहित्य का संगठित रूप सामने आया, जिसमें 'बालबोधिनी' और 'बालसखा' जैसी पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 20वीं सदी में 'पराग', 'नंदन' और 'चंपक' जैसी पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, जिससे बच्चों की कल्पना शक्ति और शिक्षा को बढ़ावा मिला। लेख में यह भी उल्लेख किया गया है कि बाल साहित्य को बच्चों की बदलती रुचियों के अनुसार ढालना आवश्यक है, ताकि वे अपनी जड़ों से जुड़े रहें और एक सशक्त समाज का निर्माण कर सकें।

11. **(ओझा, 2024)** द्वारा लिखित शोध आलेख **"साहित्य को बाल मनोविज्ञान से जोड़ती विशिष्ट कृति: शेखर एक जीवनी"** में अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर: एक जीवनी' के पहले भाग का विश्लेषण किया गया है, जो बालक शेखर के मानसिक विकास और अनुभवों पर केंद्रित है। लेखिका ने बाल मनोविज्ञान और साहित्य के परस्पर संबंध को रेखांकित करते हुए फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत के प्रभाव को स्पष्ट किया है। शेखर के बाल्यकाल के अनुभवों, जैसे भय, हीन भावना और मानसिक द्वंद्व, को उपन्यास में सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है, जो बालक के मानसिक विकास में वातावरण की भूमिका को उजागर करता है। यह आलेख साहित्य और मनोविज्ञान के अंतर्संबंध को उजागर करता है, जिससे शोधार्थियों को बाल साहित्य और मनोविज्ञान के अध्ययन में महत्वपूर्ण संदर्भ प्राप्त होते हैं।

12. **(आकांक्षा, 2024)** द्वारा लिखित शोध आलेख **"हिंदी बाल पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य और बाल भारती"** में हिंदी बाल पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास और समकालीन स्थिति का विश्लेषण किया गया है। लेख में भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर वर्तमान तक के प्रमुख योगदानकर्ताओं का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि कैसे बाल पत्रकारिता ने समय के साथ प्रगति की है। वर्तमान में लगभग 24-25 बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, जिनमें 'बाल भारती' पत्रिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो 1948 से निरंतर प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका अपनी मनोरंजक शैली और ज्ञानवर्धक सामग्री के कारण बच्चों और बड़ों दोनों में लोकप्रिय है। लेख में बाल साहित्य के लेखन में बाल मनोविज्ञान की समझ की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चों के लिए लेखन एक विशिष्ट कौशल है। यह आलेख हिंदी बाल पत्रकारिता के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र की गहन समझ प्रदान करता है।

13. **(सिंह & कुमार, 2024)** ने प्रस्तुत शोध आलेख **"प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन"** में प्राथमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय पढ़ाने वाले शिक्षकों के व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्ययन का उद्देश्य महिला एवं पुरुष शिक्षकों तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार में समानता या अंतर को समझना था। शोध में पाया गया कि महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यवहार में कोई

महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, जबकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों के व्यवहार में अंतर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जिसमें ग्रामीण शिक्षक अधिक प्रभावी पाए गए। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि शिक्षक का व्यवहार उसके आंतरिक विचारों और सामाजिक-शैक्षिक परिवेश का प्रतिबिंब होता है, जो विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। शोध कार्य शिक्षक शिक्षा, प्रशिक्षण और मूल्यांकन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी एवं व्यवहारिक है।

14. **(मिश्र, 2022)** द्वारा रचित शोध आलेख **"बाल साहित्य का ऐतिहासिक परिदृश्य"** में बाल साहित्य के उद्भव, विकास और ऐतिहासिक यात्रा का गंभीरतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। लेखक ने यह प्रतिपादित किया है कि बाल साहित्य की जड़ें मानव सभ्यता की शुरुआत से जुड़ी हैं, जब मनोरंजन के माध्यम से नैतिकता और ज्ञान का संप्रेषण प्रारंभ हुआ। वेद, उपनिषद, पुराण, पंचतंत्र और जातक कथाओं में निहित बाल तत्त्वों से लेकर आधुनिक काल के संगठित प्रयासों तक, लेख में बाल साहित्य के स्वरूप, उद्देश्य और प्रभाव को विभिन्न युगों– आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल में क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास, सूरदास जैसे भक्तिकालीन कवियों के साहित्य में बाल मनोविज्ञान की झलक मिलती है, जबकि भारतेंदु युग से लेकर स्वतंत्रता पश्चात 'बालभारती', 'पराग', 'चंपक' जैसी पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को संस्थागत रूप दिया। यह आलेख स्पष्ट करता है कि बाल साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि बच्चों के नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास का सशक्त साधन है। डॉ. मिश्र का यह शोध कार्य बाल साहित्य के अध्ययन में एक उपयोगी और महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होता है।

2.3 शोध-अंतर

यद्यपि बाल साहित्य और हिंदी शिक्षण के संदर्भ में कई शोध कार्य हुए हैं, किंतु अधिकांशतः वे या तो बाल साहित्य के विश्लेषण तक सीमित हैं या फिर शिक्षण में उसकी उपयोगिता पर सतही रूप से विचार करते हैं। प्राथमिक स्तर पर तीनों हितधारकों– शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक की सामूहिक दृष्टि से बाल साहित्य के प्रभाव को केंद्र में रखकर शोध अपेक्षाकृत कम हुए हैं। यह शोध इस अंतर को भरने का प्रयास करता है।